11 फोकस सेक्टरों की मदद से बढ़ेगा निर्यात

इन सेक्टरों को बढ़ावा देने से भारत की चीन से आयात पर कम होगी निर्भरता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: सरकार ने घरेलू मैन्यूफैक्चरिंग व निर्यात प्रोत्साहन के लिए 11 फोकस सेक्टरों का चयन किया है। इन सेक्टर में निर्यात बढ़ाने की बड़ी संभावना है जिससे भारत दुनिया की सप्लाई चेन का अहम हिस्सा बन सकेगा। इन 11 सेक्टरों में आटो कंपोनेंट, आटोमोबाइल (इलेक्ट्रिक वाहन भी शामिल) कैपिटल गुड्स, केमिकल्स, ड्रोन, इलेक्ट्रानिक्स सिस्टम डिजाइन एंड मैन्यूफैक्चरिंग (ईएसडीएम) मेडिकल डिवाइस, एयरोस्पेस व रक्षा, लेदर एवं फुटवियर, टेक्सटाइल व स्पेस (अंतरिक्ष) शामिल हैं। सरकार वर्ष 2030 तक इन 11 सेक्टरों के निर्यात को 500 अरब डालर तक ले जाना चाहती है।

पिछले सप्ताह इन सेक्टर के प्रोत्साहन को लेकर उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआइआइटी) की तरफ से बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के साथ भारी उद्योग मंत्री महेन्द्र नाथ पांडेय व स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया मौजूद थे। सरकार मैन्यूफैक्चरिंग व निर्यात के प्रोत्साहन के लिए 14 सेक्टर में प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआइ) स्कीम की घोषणा पहले ही कर चुकी है। इनमें ड्रोन व आटोमोबाइल्स भी शामिल हैं। लेकिन इन सेक्टर को फोकस एरिया में इसलिए शामिल किया गया है क्योंकि भारत में इन सेक्टर में अपने उत्पादन को काफी अधिक बढ़ाने की संभावना है। सरकार यह भी चाहती है कि इन सेक्टर के मैन्यूफैक्चरिंग व निर्यात में भारत दुनिया का नेतृत्व करे।

500
अरब डालर तक निर्यात ले जाने का लक्ष्य तय किया गया है इन सेक्टरों का वर्ष 2030 तक

- चयनित सेक्टरों को सरकार की ओर से प्रोत्साहन देने से घरेलू मैन्यूफैक्चरिंग को मिलेगा बढ़ावा
- सेमीकंडक्टर निर्माण की पूरी चेन को घरेलू स्तर पर विकसित करना चाहती है सरकार

हाल ही में सरकार ने फुटवियर पर क्वालिटी कंट्रोल नियम लागू करने की घोषणा की है जिससे फुटवियर इंडस्ट्री को बड़ा बूस्ट मिलने जा रहा है। चीन से घटिया फुटवियर का आयात बंद हो जाएगा तो बड़े पैमाने पर घरेलू फुटवियर इंडस्ट्री को उत्पादन का मौका मिलेगा। इसलिए फुटवियर को फोकस सेक्टर में शामिल किया गया है। वैसे ही भारत मोबाइल फोन निर्माण में बढ़त हासिल करने के बाद अब सेमीकंडक्टर निर्माण की पूरी चेन को घरेलू स्तर पर विकसित करना चाहता है। इसलिए ईएसडीएम को फोकस सेक्टर में शामिल किया गया है। मेडिकल उपकरण के मामले में भारत अपनी जरूरत का 60 प्रतिशत से अधिक उपकरणों का आयात करता है। इसे खत्म कर इस सेक्टर में भारत को आत्मनिर्भर बनना है। केमिकल्स के लिए भारत अब भी चीन से काफी आयात करता है। इसलिए इसे भी फोकस एरिया में शामिल किया गया है।

लाल सागर संकट से 60% बढ़ सकती है ढुलाई लागत

नई दिल्ली, प्रेट्र: आर्थिक थिंक टैंक जीटीआरआइ ने शनिवार को एक रिपोर्ट में कहा कि लाल सागर के संकट से माल ढुलाई की लागत में 60 प्रतिशत तक और बीमा प्रीमियम में 20 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस संकट के कारण बदले हुए मार्गों से माल ढुलाई के समय में 20 दिन तक की बढ़ोतरी हो सकती है।

जीटीआरआइ ने रिपोर्ट में कहा कि हाउती हमलों के कारण लाल सागर व्यापारिक मार्ग में व्यवधान आने से भारतीय व्यापार, खासकर पश्चिम एशिया, अफ्रीका और यूरोप के साथ कारोबार पर काफी प्रभाव पड़ा है। जीटीआरआइ का अनुमान है कि यूरोप और उत्तरी अफ्रीका के साथ भारत का लगभग 50 प्रतिशत आयात और 60 प्रतिशत निर्यात यानी कुल 113 अरब डालर का कारोबार इसी मार्ग से हुआ है।